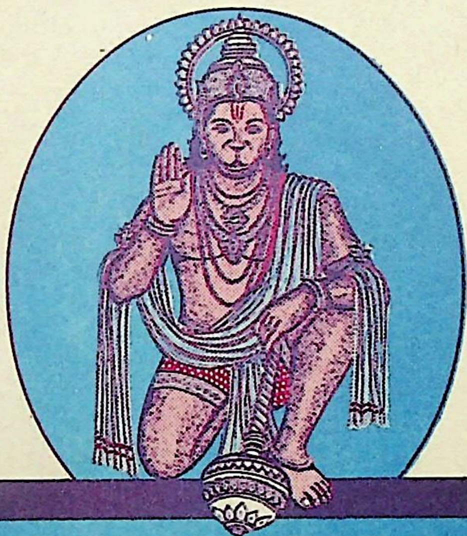
हनुमद्बन्दीमोचन

तथा

एकमुखहनुमत्कवचस्तोत्र



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

श्रीमदञ्जनीसुताय नमः ।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृत-

हनुमद्बन्दीमोचनम् ।

तथा

ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गतश्रीरामप्रोक्तम्-

एकमुखहनुमत्कवचस्तोत्रम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,'

बम्बई.

संस्करण : जून २००६, सम्वत् २०६३

मूल्य : ५ रुपये मात्र।

श्रीमदञ्जनीसुताय नमः ।



मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक-"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीगोस्वामि-तुलसीदासजीकृत-

हनुमद्बंदीमोचन ।



दोहा-वीर बखानौं पवनसुत, जानत सकल जहान । धन्य धन्य अंजनित-नय, संकटहर हनुमान ॥ चौपाई-जै जै जै हनुमान अड़ंगी। महावीर विक्रम बजरंगी॥ जै कपीश जै पवनकुमारा । जै जग-वंदन शील अगारा॥ जै उद्योत अमल अविकारी । अरिमर्दन जै जै गिरिधारी।

अंजनिउदर जन्म तुम लीन्हा ॥ जैजै-
कार देवतन कीन्हा । बजीं दुंदुभी गगन
गँभीरा । सुरमन हर्ष असुरमन पीरा ॥
कांपे सिंधु लंक शंकाने । छूटहि बंदि
देवतन जाने ॥ ऋषीसमूह निकट चलि
आये । पवनतनयके पद शिर नाये ॥
बार बार अस्तुति कर नाना । निर्म्मल
नाम धरा हनुमाना ॥ सकल ऋषिन
मिलि असमत ठाना । दीन्ह बताय
लाल फल खाना ॥ सुनत वचन कपि
अति हर्षाने । रविरथ ग्रसा लाल फल
माने ॥ रथ समेत रवि कीन्ह अहारा ।
शोर भयो तहँ अतिभयकारा ॥ विनत-
मारि सुर मुनि अकुलाने । तब कपी-

शकी अस्तुति ठाने । सकल लोक वृत्तांत सुनावा । चतुरानन तब रवि उगिलावा ॥ कहेउ बहोरि सुनहु बलशीला । रामचंद्र करि हैं बहु लीला ॥ तब तुम बलकर करब सहाई । अबहिं बसौ काननमें जाई ॥ अस कहि विधि निजलोक सिधारा । मिले सखनसँग पवनकुमारा ॥ खेलहिं खेल महा तरु तोरहिं। केलि करहिं बहु पर्वत फोरहिं ॥ जेहि गिरि चरण देत कपि धाईं । धलसों धसकि रसातल जाई ॥ कपि सुग्रीव वालिकी त्रासा । निरखत रहे राम मगु आसा ॥ मिले राम लै पवनकुमारा । अति आनंद समीरदुलारा ॥ पुनि मुँदरी

रघुपतिसों पाई । सीता खोज चले कपि-
राई ॥ शतयोजन जलनिधिविस्तारा ।
अगम अगाध देवमन हारा ॥ विन श्रम
गोखुरसरिस कपीशा । लांघिगये कपि
कहिजगदीशा ॥ सीताचरण शीश तिन
नावा । अजर अमरकर आशिष पावा॥
रहे दनुज उपवन रखवारी॥ इकते एक
महाभट भारी ॥ तिनहिं मारि उपवन
करि खीसा । दहेउ लंक काँपेउ दश-
शीसा ॥ सिया शोध लै पुनि फिर आयें॥
रामचंद्रके पद शिर नाये ॥ मेरु विशाल
आनि पलमाहीं । बाँधासिंधु निमिष इक
माहीं॥भे फणीश शक्तीवश जबहीं । राम
विलाप कीन्ह बहु तबहीं ॥ भवनसमेत

सुषेणहिं लाये। पवन सँजीवनको पुनि धाये॥मगमहँ कालनेमि कहँमारा।सुभट अमित निश्चर संहारा॥ आनि सँजीवन शैलसमेता। धरि दीन्हों जहँ कृपानिकेता॥फणिपतिकेर शोक हरि लीन्हा। वर्षि सुमन सुर जै जै कीन्हा॥अहिरावण हरि अनुज समेता। लइगो जहँ पाताल निकेता॥तहां रहै देवीसुस्थाना।दीन्हचहै बलिकाढिकृपाना॥पवनतनयतहँकीन्ह गुहारी। कटकसमेत निशाचर मारी॥ रीछ कीशपति जहां बहोरी। रामलषण कीन्हेसि इक ठौरी॥ सब देवनकी बंदि छुड़ाई। सो कीरति नारद मुनि गाई॥ अक्षकुमार दनुज बलवाना। ताहि

निपात्यो श्रीहनुमाना॥कुंभकरण रावण कर भाई।ताहि मुष्टिका दी कपिराई मेघनादपर शस्त्रहि मारा।पवनतनय सम को बरिआरा॥सुरहातनय नरांतक जाना।पलमहँ ताहि हताहनुमाना॥ जहँलगि नाम दनुजकरि पावा। पवन-तनय तेहि मारि खसावा॥ जे मारुतसुत जनअनुकूला। नाम कृशानु शोकसम तूला॥जेहि जीवन कहँ संशय होई।अघ समेत तेहि संकट खोई॥ बंदी परे सुमिर हनुमाना। गदागरू लै चल बलवाना॥ यम कहँ बांधि वामपद दीन्हा। मृतक जिवाय हालबहु कीन्हा॥सोभुजबलकहँ कीन्ह कृपाला।अछत तुम्हार मोर अस

हाला । आरतहरन नाम हनुमाना। शारद सुरपति कीन बखाना ॥ संकट रहै न एक रतीको।ध्यान धरै हनुमान यती को॥धावहु देखि दीनता मोरी। काटहु बंदि कहौं कर जोरी॥ कपिपति वेग अनुग्रह करहू। आतुर आय दासदुख हरहू॥ रामशपथ मैं तुमहि खवाई।जो न गुहारि लागिशिव जाई॥बिरद तुम्हार सकल जग जाना। भवभंजन सज्जन हनुमाना॥ यह बंधनकर केतिकबाता। नाम तुम्हार जगतसुखदाता॥करहु कृपा जै जै जगस्वामी । बार अनेक नमामि नमामी ॥ भौमवार करि होमविधाना। धूपदीप नैवेद्य सुजाना ॥ मंगलदायककी

लवलावै । सुर नर मुनि तुरतहि फल पावै॥जैति जैति जै जै जगस्वामी॥समरथ पुरुष कि अंतर्यामी ॥ अंजनितनय नाम हनुमाना । सो तुलसीके कृपानिधाना ॥ दोहा–जै कपीश सुग्रीवकी, जै अंगद हनुमान । राम लषण जै जानकी, सदा करहु कल्यान ॥ बंदीमोचन नाम यह, भौमवार वरमान । ध्यानधरै नर पावही, निश्चय पद निर्वान । जो यह पाठक पढै नित, तुलसी कहे विचारि । परै न संकट ताहि तन, साखी है त्रिपुरारि ॥ सवैया–आरत बैन पुकारि कहौं कपि-राज सुनौ बिनती इक म्हारी । अंगद अरु,सुग्रीव महाबल देहु सदा बल शरण

तिहारी ॥ जाम्बवंत नल नील पवनसुत द्विविद मयंद महाभट भारी। दुख दोष हरौं तुलसी जनकी प्रभु है दश वीरनकी बलिहारी ॥

इति श्रीगोस्वामीतुलसीदासकृत
हनुमद्वंदीमोचन संपूर्ण ॥



॥ श्रीः ॥

श्रीगणेशाय नमः । ॐ श्रीपवनाभिनन्दनाय नमः ॥

एकमुखहनुमत्कवचस्तोत्रम् ।

ॐ नमो भगवते हनुमदाख्यरुद्राय सर्वदुष्टजनमुख-स्तंभनं कुरु कुरु ॐ ह्रांह्रींह्रूंठंठंठंफट्स्वाहा ॥ ॐ नमो हनुमते अञ्जनीगर्भसम्भूताय रामलक्ष्मणानन्दकाय कपिसैन्यप्राकाराय पर्वतोत्पाटनाय सुखसाध्यंकराय परोच्चाटनाय कुमारब्रह्मचारिणे गम्भीरस्वरोदयाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं सर्वदुष्टनिवारणाय स्वाहा ॐ नमो हनुमत्सर्वग्र-हान्भूतभविष्यद्वर्त्तमानदूरस्थसमीपस्थान्सर्वकालं दुष्ट-बुद्धीनुच्चाटय उच्चाटय परबलानि क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्यं साधय साधय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां स्वाहा फट् देहि देहि ॐ शिव सिद्धिं ॐ ह्रां ह्रूँ स्वाहा ॥ ॐ परकृतयंत्र-मंत्रपराहंकारभूतप्रेतपिशाचपरदृष्टिसर्वविघ्नदुर्जनचेट-कविद्यासर्वग्रहभयानि निवारय गर्वं पच पच दल दल विलय विलय कीलय कीलय सर्वत्र दुष्टवाचम् ॥ ॐ फट्स्वाहा ॥ ॐ हनुमते पाहि पाहि एहि एहि सर्वग्रह-भूतानां डाकिनीशाकिनीसर्पविषान् आकर्षय आकर्षय मर्दय मर्दय छेदय छेदय प्रभूतमृत्यून्शोषय शोषय ज्वल प्रज्वल भूतमण्डलपिशाचमण्डलनिरसनाय भूत-

ज्वरपित्तज्वरचातुर्थिकज्वर--विष्णुज्वरमाहेश्वरज्वरां-
श्छिंधि छिंधि अविशूलपक्षशूलाशिरोभ्यन्तरशूलगुल्म-
शूलपित्तशूलब्रह्मराक्षसकुलं प्रबलनागकुलविषं निर्विषं
कुरु कुरु फट् स्वाहा ॥ ॐ ह्रां सर्वदुष्टग्रहनिवारणाय
स्वाहा ॥ ॐ नमो हनुमन् पापद्विषच्चोरदृष्टिं हनुमदा-
ज्ञया स्फुर ॐ स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रः ह हनुमते
नमः श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये। श्रीरामचन्द्रदूत उवाच
॥ ॐ हनुमान्पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ॥ पातु
प्रतीच्यामक्षोभ्यः पातु सागरगस्तथा ॥ १ ॥ उदीच्या-
मूर्ध्वगः पातु केशरीप्रियनन्दनः ॥ अधस्ताद्विष्णुभ-
क्तस्तु पातु मध्ये तु पावनिः ॥ २ ॥ ऊर्ध्वान्तरादिशः
पातु पिता शोकविनाशकः ॥ लंकाप्रदाहकः पातु सर्व-
विघ्ननिवारकः॥ ३ ॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायु-
नन्दनः ॥ भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ४॥
नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः ॥ कपोलकर्ण-
मूले च पातु श्रीरामकिंकरः ॥ ५ ॥ नासाग्रे अञ्जनी-
सूनुः पातु चक्षुर्हरीश्वरः ॥ वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां
पिंगलोचनः ॥ ६ ॥ ओष्ठं रामप्रियः पातु चिबुकं दैत्य-
कोटिहृत् ॥ पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरा-
र्चितः॥ ७ ॥भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः॥
नखान्नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः ॥ ८ ॥ रक्षे

मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः ॥ लंकाविभञ्जकः
पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ॥ ९ ॥ नाभिं च रामदूतश्च
कटिं पात्वनिलात्मजः ॥ गुह्यं पातु महाप्राज्ञो लिंगं
पातु सदाशिवः ॥ १० ॥ ऊरू च जानुनी पातु लंका-
प्रासादभंजनः ॥ जंघे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महा
बलः ॥ ११ ॥अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः॥
अञ्जनीसुतसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलींस्तथा ॥ १२ ॥
सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ॥ हनु-
मत्कवचं यस्तु पठेन्नित्यं विचक्षणः ॥ १३ ॥ स एव
पुरुषः श्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विंदति ॥ त्रिकालमेककालं
वा यः पठेन्नात्र संशयः ॥१४॥ सर्वान्रिपून् क्षणाज्जित्वा
स पुमाञ्जयमाप्नुयात् ॥ मध्यरात्रौ जले स्थित्वा सप्त-
वारं पठेद्यदि ॥ १५ ॥ क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनि-
वारणम् ॥ अश्वत्थमूले तद्वारे स्थित्वा पठति यः पुमान्॥
॥ १६ ॥ अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयी भवेत्॥
श्रीरामाग्रे हनुमदग्रे यः पठेच्च नरः सदा ॥ १७ ॥
लिखित्वा पूजयेद्यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ यः करे
धारयेन्नित्यं सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥ १८ ॥ विवादे
युद्धकाले च द्यूते राजकुले रणे ॥ दशवारं पठेद्रात्रौ
मिताहारो जितेन्द्रियः ॥ १९ ॥ विजयो जायते लोके

मानवः स्यान्नराधिपः ॥ भूतप्रेतमहादुर्गे रणे सागरसम्प्लवे ॥ २० ॥ सिंहव्याघ्रभये चाग्नौ शरशस्त्रास्त्रपातने ॥ शृंखलाबन्धने चैव कारागेहे निमंत्रणे ॥ २१ ॥ शोके महारणे चैव कायस्तंभसुदारुणे ॥ शोके महारणे चैव ब्रह्मग्रहविनाशने ॥ २२ ॥ सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नोत्यसंशयः॥ भूर्ज्जे वा बसने रक्ते क्षौमे वा तालपत्रके ॥ २३ ॥ त्रिगन्धेन च मस्या वा लिखित्वा धारयेन्नरः ।पञ्चसप्तत्रिलोहैर्वा गोपितं कवचं शुभम्॥२४॥ गले कण्ठे बाहुमूले करे शिरसि धारितम् ॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यं पुनः सत्यं पुनः पुनः ॥ २५ ॥ सर्वान कामानवाप्नोति सत्यं श्रीरामभाषितम् ॥ २६ ॥ उल्लंघ्य सिंधोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः॥ आदाय तेनैव ददाह लंकां नमामि तं प्रांजलिराञ्जनेयम् ॥ २७ ॥

इति श्रीहनुमत्कवचमेकमुखीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

